प्रस्तावना

कहानी के सांप्रतिक रूप को अंगुली पकड़ कर उपन्यास ने चलना सिखाया, परंतु एक बार कहानी-शिशु ने अपने लड़खड़ाते पांवों को संभाला, फिर तो वह चलता ही गया और कालांतर में धावक बन गया। आज कहानी की उपन्यास से इतर विधा के रूप में एक स्वतंत्र पहचान है एवं वह अपने पौराणिक-धार्मिक संस्कारों की छाया मात्र नहीं रह गई है। परंतु दुःख इस बात का है कि कहानी की समीक्षा के औज़ार अभी भी औपन्यासिक चश्मे से ही देखकर बनाए जाते हैं। कहानी आज के तनावों की तनतनाहट की कौंध है, जहां बाह्य जगत की ख़बरें शब्दों में आकार ग्रहण कर सत्य का रूप धारण कर लेती हैं। यहां यथार्थ शब्दों में बिंधा होता है, शब्द वाक्यों में एवं वाक्य अनुच्छेदों में। वाक्यों के द्वारा निर्मित इस जाल में कहानीकार-धीवर जीवन-सफरी को फाँस लेता है। परंतु यहां जीवन-सफ़री जाल का स्थायी अंश हो जाती है, कुछ-कुछ उसके रेशे की तरह। कहानी का सच इसीलिए इतना जटिल होता है। लोक-सत्य से व्यक्ति-सत्य की यात्रा के दौरान कहानी ने समय के कई चेहरे देखे। आज वह जीवन की तरह ही वृत्ताकार है, जो स्वयं न जाने कहां से शुरू होता है और न जाने कहां ख़त्म। परंतु स्थूलतः दृष्टिपात करने पर कहानी में जीवन के एक अंश का आद्यंत चमकता नज़र आता है। कहानी में चीज़ें समय के संदर्भ में स्मृत होती हैं; अतः वह उपन्यास की तुलना में अधिक शब्द-सापेक्ष होती है। कहानी की दुनिया में शब्द उन घटनाओं के हमराही होते हैं, जो कहानी का सच हैं। इसलिए आज कहानी यदि अपनी संरचना में काव्यात्मक और उद्देश्य में कथात्मक हो गई है, तो यह आश्चर्य की बात नहीं है। इसीलिए मुझे इस विधा से गुज़रने पर पद्य एवं गद्य दोनों का आनंद प्राप्त होता है और इसीलिए यह विधा बार-बार मुझे आकर्षित करती है। इस विधा के प्रति मेरे आकर्षण का एक अन्य कारण यह भी है कि यह मेरे खून का हिस्सा है। मेरे पिता (श्री विमलेश्वर) एक कहानीकार हैं और उनके प्रभाव से मेरी अनुवांशिकी में ही यह विधा विद्यमान है। इसके साथ ही मुझमें साठोत्तरी कहानी के प्रति भी रुचि रही है

क्योंकि इसने हिंदी कहानी के इतिहास को बहुत ही समृद्ध किया। यहीं से कहानी विधा ने नए तौर-तरीक़े सीखे। साठोत्तरी कहानी के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर ज्ञानरंजन की कहानियों ने मुझे छात्र-जीवन से ही बहुत अधिक प्रभावित किया है।

ज्ञानरंजन हिंदी कहानी विधा के इतिहास में एक ऐसा नाम है, जिसके बिना हिंदी कहानी की चर्चा अधूरी मानी जाती है। इनकी कहानियों में सांप की आँखों-सा सम्मोहन है, जो पाठक को अपनी 'ग्रिप' में ले लेता है। इतना महत्त्वपूर्ण होने पर भी इस कहानीकार का हिंदी कथा-जगत में उल्लेख तो बहुत होता है, परंतु इसकी कहानियों का विधिवत् रूप से समुचित मूल्यांकन नहीं हुआ है। किंचित इसका कारण है-उनकी कहानियों पर लगने वाला दुर्बोध्यता का आरोप, जिसका कोई सिर-पैर ही नहीं है। मैंने उनके कथा-साहित्य के प्रति आलोचना के उपेक्षित रवैये को बदलने का अपने इस शोध प्रबंध में लघु प्रयास किया है, यदि इससे भविष्य में उनके कथा-साहित्य के समुचित मूल्यांकन का प्रयास प्रारंभ होता है, तो मैं अपना प्रयास सार्थक समझूंगा।

ज्ञानरंजन के कथा-साहित्य पर चूंकि अभी भी सही तरीक़े से विचार नहीं हुआ है, इसलिए इस क्षेत्र में कदम बढ़ाना जहां एक ओर कठिन था, वहीं दूसरी ओर सरल भी। लेकिन इसमें सरलता कम, कठिनाई अधिक पाई गई। बनी-बनाई लीक से अलग चलने का भी अपना ही एक आनंद है। वस्तुत: 'पल प्रतिपल' (अंक : 45, जुलाई-सितंबर : 1998) के ज्ञानरंजन विशेषांक एवं डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र द्वारा संपादित 'कहानीकार ज्ञानरंजन' के अलावा ज्ञानरंजन पर स्वतंत्र रूप से कोई शोध-सामग्री मुझे उपलब्ध न हो सकी। हिंदी कथा-साहित्य की आलोचना के क्रम में ज्ञानरंजन को उनकी 'पिता', 'शेष होते हुए', 'फेंस के इधर और उधर', 'घंटा', 'बहिर्गमन', और 'अनुभव' जैसी कुछ ही कहानियों के

फ्रेम में रखकर देखा गया और ख़ानापूरी करने के लिए कुछ पंक्तियों में आलोचना कर दी गई । ऐसी स्थिति में ज्ञानरंजन की मौलिक कहानियों और उनके विचार-संग्रह 'कबाड़ख़ाना' को केन्द्र में रखकर मुझे शोध-कार्य को आगे बढ़ाना पड़ा । इस कार्य में ज्ञानरंजन से हुई एकाधिक मुलाकातें और समय-समय पर उनके साथ हुए विचार-विमर्श बड़े सहायक सिद्ध हुए । शोधकार्य के दौरान उनसे हुए पत्राचार और दूरभाष पर संपर्क-सूत्र ने न केवल मेरे विचारों को पुष्ट किया बल्कि शोध-कार्य को जारी रखने हेतु नयी खुराक भी मुहैया करायी ।

मेरे शोध-कार्य का विषय है : **'ज्ञानरंजन की कहानियों में मध्यवर्ग का स्वरूप और विश्लेषण'** । प्रस्तुत शोध-प्रबंध को मैंने सात अध्यायों में विभाजित किया है । प्रथम अध्याय का शीर्षक है– **'ज्ञानरंजन : व्यक्ति और साहित्यकार के रूप में'** । इसमें मैंने विविध संदर्भों में ज्ञानरंजन के व्यक्ति एवं कथाकार की खोज की है । इस अध्याय में यह भी खोजने की चेष्टा की गई है कि आख़िर क्यों ज्ञानरंजन ने लेखन का रास्ता चुना और उनके लेखन के इस चेहरे का कारण क्या है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का द्वितीय अध्याय है– **'साठोत्तरी हिंदी कहानी में संवेदना का परिप्रेक्ष्य और ज्ञानरंजन की कहानियाँ'** । उक्त अध्याय में साठोत्तरी हिंदी कहानी की संवेदनाओं के परिप्रेक्ष्य में ज्ञानरंजन की कहानियों की जाँच-पड़ताल की गई है । इसमें कहानी के स्वरूप-विवेचन के साथ साठोत्तरी कहानी में संवेदनाओं के बदलते चेहरे को युग के संदर्भ में देखा गया है एवं वहीं से ज्ञानरंजन की कहानियों पर रोशनी डाली गई है । इस अध्याय में साठोत्तरी कहानी में शिक्षित शहरी मध्यवर्गीय समुदाय के जीवन की विसंगतियों के संदर्भ में ही ज्ञानरंजन की कहानियों का विवेचन हुआ है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का तृतीय अध्याय है– **'मध्यवर्ग की संकल्पना : उद्‌भव, विकास एवं सांप्रतिक स्वरूप'** । इस अध्याय में वर्ग की अवधारणा के बीच मध्यवर्ग की संकल्पना की गई है । इसमें मध्यवर्ग के विविध रूपों का स्वरूप-विवेचन तो हुआ ही है, इसके साथ ही इस वर्ग के उद्‌भव, विकास एवं इसके सांप्रतिक स्वरूप के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आधारों की ऐतिहासिक दृष्टि से विवेचना हुई है ।

उक्त शोध-प्रबंध का चतुर्थ अध्याय है– **'ज्ञानरंजन की कहानियों में मध्यवर्ग का स्वरूप'** । इस अध्याय में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा यौन धरातलों पर मध्यवर्गीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में ज्ञानरंजन की कहानियों का तद्‌युगीन संदर्भों में विवेचन हुआ है ।

शोध-प्रबंध का पंचम अध्याय है– **'ज्ञानरंजन के मध्यवर्गीय पात्रों का विश्लेषण'** । इस अध्याय में साठोत्तर काल के विविध सामाजिक-मनोवैज्ञानिक संदर्भों में ज्ञानरंजन के मध्यवर्गीय पात्रों का विवेचन एवं विश्लेषण हुआ है ।

इस शोध-प्रबंध का षष्ठ अध्याय है– **'नगरबोध, मध्यवर्ग और ज्ञानरंजन की कहानियाँ'** । इस अध्याय में ज्ञानरंजन की कहानियों में नगर की भूमिका तो दिखाई ही गई है, इसके साथ ही उसके विविध मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में ज्ञानरंजन की कहानियों का मध्यवर्गीय समाज के आईने में विवेचन हुआ है ।

'व्यंग्य, मध्यवर्ग और ज्ञानरंजन की कहानियाँ' शोध-प्रबंध का सप्तम एवं अंतिम अध्याय है । इस अध्याय में ज्ञानरंजन का मध्यवर्ग के प्रति अपनी कहानियों में जो 'ट्रीटमेंट' है, उसका मूल्यांकन हुआ है । उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय समाज पर व्यंग्य की जो विविध स्थितियाँ हैं, उनका भी मूल्यांकन

व्यंग्य के सृजन, स्वरूप, गुण एवं उद्देश्य को दृष्टिगत करते हुए हुआ है ।

इसके पश्चात् **उपसंहार** में सारे अध्यायों के वैचारिक निष्कर्षों का समाहार प्रस्तुत किया गया है । यहां वे सारे निष्कर्ष विद्यमान हैं, जिन्हें शोधना शोधार्थी का लक्ष्य था ।

इस शोध-प्रबंध को पूरा करने एवं मेरे शोध-कार्य में सहायता प्रदान करने हेतु मैं ज्ञानरंजनजी का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने अपना अमूल्य समय मुझे दिया । उनके अतिरिक्त मैं स्व. डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता हूँ, जिन्होंने संप्रति अप्राप्य पुस्तक 'कहानीकार ज्ञानरंजन' मुहैया कराई और उसकी प्रतिलिपि मुझ तक भेजने का कार्य मित्र अमरेंद्र तिवारी एवं मेरे भाई प्रदीप ने पूरा किया । एतदर्थ मैं इन दोनों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ । इस शोध-कार्य को पूरा करने के क्रम में समय-समय पर मुझे मेरी सहकर्मी एवं दीदी डॉ. मनीषा झा से जो प्रोत्साहन मिला, मैं उसके लिए उनका भी आभारी हूँ ।

इस शोध-कार्य को पूरा करने के क्रम में मैं अपने प्रिय बाधक तत्त्वों (धनंजय, धीरज, ओम्कार तथा शैलेन्द्र) का भी आभारी हूँ क्योंकि शोध-प्रबंध के लेखन-कार्य के दौरान इन मित्रों ने अपना मूल धर्म भुला दिया एवं मेरे कार्य को संपन्न कराने में बड़ी भूमिका निभाई । इसी क्रम में मैं अपनी माँ (श्रीमती रमा द्विवेदी), पिता (श्री विमलेश्वर) एवं मेरे भाई-बहिनों का भी आभारी हूँ, जिन्होंने निराशा के क्षणों में मेरे मन में आशा का संचार किया, स्नेह दिया और नया उत्साह प्रदान किया ।

सर्वशेष में मैं कृतज्ञता-ज्ञापन के क्रम में अपने शोध-निदेशक डॉ. अरुण

होता, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर बंग विश्वविद्यालय का आभारी हूँ। उनके बिना इस कठिन कार्य को पूरा करना मेरे लिए असंभव ही था क्योंकि मेरा लेखन के प्रति आलस्य ही मेरा सबसे बड़ा शत्रु रहा है। इसलिए अपने शोध-निदेशक डॉ. होता से मिली मीठी फटकारों की मैं इस शोध-कार्य के पूर्ण होने में एक अहम् भूमिका देखता हूँ। समय-समय पर उनके द्वारा दिए गए आदेशों-निर्देशों को मैंने अचूक हथियार के तौर पर प्रयोग किया। उनका अमूल्य समय तो उन्होंने मुझे दिया ही, साथ ही कीमती दिशा-निर्देशन भी। इस शोध-प्रबंध को अंतिम रूप देते हुए मेरा मन उनके प्रति अकुंठ श्रद्धा से भरा है।

सुनील कुमार द्विवेदी

(सुनील कुमार द्विवेदी)
रजि.संख्या : 370001,
वर्ष : 2004-2005

दिनांक : 11.10.2007
हिंदी विभाग,
उत्तर बंग विश्वविद्यालय,
राजा राममोहनपुर,
जिला : दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल)
पिन कोड : 734013, भारत।
फ़ोन : 0353-2699016
: 09832316773